2 थिस्सलुनीकियों

लेखकः

प्रभु यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस।

समयः

58 ईस्वी के लगभग।

विषयः

पहले पत्र की तरह, इस में प्रमुख विषय है-यीशु मसीह का द्वितीय आगमन। वहाँ विश्वासियों के सताव के समय, कुछ धार्मिक लोगों ने भेंट दी थी। वे यह सिखाने लगे थे कि प्रभु का दिन आ चुका है 2:1-2. सच यह है कि प्रभु के दिन का सम्बन्ध यीशु के दोबारा आने से जुड़ा हुआ है। साथ ही परमेश्वर के उस न्याय (दण्ड, क्रोध) से जुड़ा हुआ है जो इस दुनिया के अनाज्ञाकारियों और अविश्वासियों पर आने वाला है। गलत शिक्षा देने वालों का विरोध करते हुए पौलुस सिखाता है कि प्रभु का दिन तब तक नहीं आएगा, जब तक 'पाप का पुत्र' या 'दुष्ट' प्रगट न हो जाए। यही ख्रीष्ट विरोधी है जो युग के अन्त में सामने आएगा। (1 यूहन्ना 2:18; प्रका. 13; मत्ती 24:15-24)। यह कहते हुए पौलुस ने लोगों की हिम्मत बढ़ाई कि उन्हें डरना नहीं चाहिए। यह भी कि जो कुछ उसने उन्हें सिखाया है उसी पर टिके रहें। पत्र के अन्त में वह आलस्य और निकम्मेपन के बारे में लम्बी चेतावनी देता है।

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस
की ओर से थिस्सलुनीकियों की
कलीसिया (चर्च) के नाम, जो हमारे पिता
परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है।

2हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु
मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे।

3हे भाइयो-बहनो, तुम्हारे बारे में हमें
हर समय परमेश्वर की बड़ाई करनी
चाहिए और यह उचित भी है, इसलिये
कि तुम्हारा विश्वास और आपसी प्रेम
बहुत बढ़ता जाता है। 4यहाँ तक कि
हम खुद परमेश्वर की कलीसिया (चर्च)
में तुम्हारे विषय में आनन्दित होते हैं,
कि जितने सताव तुम सहते हो, उन
सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास
दिख रहा है।

5यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट
सबूत है, कि तुम परमेश्वर के राज्य के
लायक ठहरो, जिसके लिये तुम दुःख भी
उठाते हो। 6क्योंकि परमेश्वर के पास यह
न्याय है, कि जो तुम्हें दुःख देते हैं, उन्हें
बदले में दुःख दें और तुम्हें जो क्लेश पाते
हो, हमारे साथ चैन दें। 7तुम जो अभी सताव
में से होकर जा रहे हो, परमेश्वर तुम्हें हमारे
साथ तसल्ली देंगे। उस समय जब कि प्रभु
यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती
हुई आग में स्वर्ग से आयेंगे, 8तब परमेश्वर

1:1 1 थिस्स. 1:1.

"सिलवानुस" - सीलास भी वही व्यक्ति है।

1:2 रोमि. 1:7.

1:3 रोमि. 1:8 आदि।

"तुम्हारा...है"- 1 थिस्स. 3:10,12; 4:10. उनके लिए पौलुस की आशा पूरी हो रही थी, उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर भी मिल रहा था।

1:4 "आनन्दित"- 2 कुरि. 7:14. यह चापलूसी नहीं थी - 1 थिस्स. 2:5. उस कलीसिया की स्थिति में भी आनन्दित था।

"सताव"- 1 थिस्स. 1:6; 2:14; 3:3

1:5 "स्पष्ट(प्रमाण)"- हमारे परखे जाने और सताए जाने को धीरज से सहते जाना, हमारे मसीह में विश्वास का यह प्रमाण है कि हमारा विश्वास सच्चा और जीवित है। यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का प्रमाण भी है। इसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। शायद इसका अर्थ है कि उन्हें चुना जाने का निर्णय और उन में कार्य करना उनके विश्वास में बने रहने से सिद्ध होता है। फ़िलि. 1:27-28 से तुलना करें।

"परमेश्वर का राज्य"- मत्ती 4:17 के नोट्स देखें।

"योग्य ठहरो"- लूका 20:35; प्रका. 3:14 से तुलना करें । उद्धार पाने या परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए कोई भी योग्य नहीं है - रोमि. 3:9,19,23; कुल. 1:13-14 विश्वासी अपने चरित्र और विश्वास में बने रहने के द्वारा पुष्टि करते है; कि परमेश्वर ने उन्हें बदला है। उन्हें अपने राज्य के लिए इस प्रकार से जीवित रहने के योग्य बनाया है जो उसके राज्य के लिए उचित है।

"दुःख"- रोमि. 8:17; मत्ती 5:10. यह उनके योग्य होने का प्रमाण था। जो उसके राज्य के लिए, दुःख उठाने का इन्कार करते हैं, वे उसके राज्य के योग्य नहीं है।

1:6 "परमेश्वर...दुख दे"- यह बाईबल का एक सत्य है (व्यव. 32:4; भजन 9:16; 11:7; 89:14; 111:7; नीति. 29:26; यशा. 30:18; दानि. 4:37; रोमि. 3:26; प्रका. 15:3; 16:5-7)। जो मन परिवर्तन के लिए तैयार नहीं होता, उसे दण्ड देने के द्वारा और जो उसके राज्य के लिए दुःख उठाने के लिए तैयार है, उसे अनन्त विश्राम देने का द्वारा अपना न्याय प्रगट करते हैं पद 7; रोमि. 2:6-11 से तुलना करें बदले में गिनती 31:1-3; व्यव. 32:35,41; रोमि. 12:19; इब्रा. 10:30.

1:7 "स्वर्गदूत"- मत्ती 24:31; यहूदा 14

"आग"- इब्रा. 10:27; 12:29; 2 पतर. 3:7; प्रका. 19:11-16; यशा. 66:15; 30:27; 24:6.

"प्रभु यीशु .....आएँगे"- परमेश्वर कभी-कभी लोगों से बदला लेते हैं और यहाँ रह विश्वासियों को बचा लेते हैं। अधिकांश बातों के सम्बन्ध में लोगों का न्याय तभी होगा, जब प्रभु यीशु उस युग के अन्त में आएँगे। तभी सभी बातें ठीक कर दी जाएगीं, न्याय स्थापित किया जाएगा। लोग देखेंगे कि न्याय प्रबल है।

"आएँगे"- तब परमेश्वर के लोगों को आराम मिलेगा। उसके पहले ऐसा नहीं होगा। मत्ती 24:29-30; 1 कुरि. 1:7; तीतुस 2:13 से तुलना करें।

को नहीं पहचानने वालों और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानने वालों को सज़ा देंगे। 9वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। 10यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों के महिमा पाने और सब विश्वास करने वालों में आश्चर्य का कारण होने के लिए आएँगे, क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया।

11इसलिये हम सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारे परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के लायक समझें और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को शक्ति के साथ पूरा करें, 12कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की कृपा के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम

1:8 "जो परमेश्वर को नहीं पहचानते"- लोग सच्चे परमेश्वर को इसलिए नहीं जानते क्योंकि वे ऐसा चाहते ही नहीं। किसी भी ऐसे अवसर को वे ठुकराते हैं। परमेश्वर के साथ संगति के बजाए वे गलत को प्राथमिकता देते हैं। यूहन्ना 3:19-20; रोमि. 1:18-25; इफ़ि. 4:17-19.

"सुसमाचार को नहीं मानते"- यह उन लोगों की ओर संकेत है, जिन्होंने सुनने के पश्चात इन्कार कर दिया है। मसीह के प्रति आज्ञाकारिता के बजाए, जिसे वे स्वतंत्रता कहते हैं, उसे चाहते हैं। यहाँ ध्यान दें मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मानी जानी चाहिए, मात्र विश्वास काफ़ी नहीं है। मत्ती 7:21,24; प्रे.काम 5:32; रोमि. 6:17; इब्रा. 5:9; 1 पतर. 1:22; 4:17. देखा जाए तो सुसमाचार पर विश्वास करने का परिणाम इसके प्रति आज्ञाकारिता है। विश्वास करना और आज्ञा मानना एक दूसरे से जुड़े हुए हैं जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता। याकूब 2:14-26 से तुलना करें। बिना कार्य का विश्वास नहीं होता है। प्रे. काम 22:10; इब्रा. 11:4 आदि।

"सज़ा देंगे"- परमेश्वर किसी को दण्ड नहीं देना चाहते। यहेज. 18:23,30-32; योएल 2:13; 2 पतर. 3:1. जब लोग पश्चात्ताप से इन्कार करते और पाप में लगे रहते है। न्यायी होने के कारण वह दण्ड देते हैं। निर्ग. 34:6-7; नहूम 1:3. यदि परमेश्वर अपराधी को दण्ड नहीं देते हैं, तो वह न्यायी नहीं हैं और एक क्रम न होने के कारण संसार अस्त व्यस्त होगा।

1:9"उसकी...से"- यशा. 2:10-11,19,21.

"अनन्त विनाश"- 2:3; मत्ती 7:13; रोमि. 9:22; गल. 6:8; फ़िलि. 3:19; 1 थिस्स. 5:3; 1 तीमु. 6:9; 2 पतर. 3:7,12,16; प्रका. 17:8,11 विनाश का अर्थ है पूर्ण नाश (प्रका. 21:8)। बाईबल यह नहीं कहती है कि ऐसे लोगों का जीवन समाप्त हो जाता है। मत्ती 25:46; लूका 16:26 से तुलना करें "प्रभु के सामने से" मत्ती 7:23; 25:41; प्रका. 22:15-16 से तुलना करें। उनके सर्वनाश का यही अर्थ है। वे उस परमेश्वर से अलग किए जाएँगे, जो आशीष आनन्द और शान्ति का स्त्रोत है। अपने जीवनकाल में उन्हों ने इसी का चुनाव किया था (पद 8) यही उन्हें मिलेगा भी। यह न्याय भी है कि उन्हें दण्ड मिले।

1:10 "उस दिन"- 1 थिस्स. 5:2; यशा. 2:12 से तुलना करें।

"सन्त"- मसीह में सभी सच्चे विश्वासी, (रोमि. 1:7; 1 पतर. 2:9)।

"महिमा"- यूहन्ना 17:10; इफ़ि. 1:12,14.

"प्रशंसा (महिमा)"- जब अन्त में हम उसे वैसा हो देखेंगे जैसा वह हैं, तो हम कैसे आनन्द से ओत-प्रोत हो जाएंगे।

पवित्र लोगों में जो उस पर विश्वास करते है उन में मसीह आदर पाते हैं। वे ही महिमा प्राप्त करेंगे। अन्य दूसरे अपने अविश्वास और व्यवहार से निरन्तर उनका अनादर करेंगे।

"तुम ने...किया"- 1 थिस्स. 1:7-10.

1:11 "सदा...करते हैं"- रोमि. 1:8-9; इफ़ि. 1:16; 3:16; फ़िलि. 1:4,9; कुल. 1:3,9,21; 1 थिस्स. 1:2; 3:10.

"लायक"- पद 5; इफ़ि. 4:1; रोमि. 1:6; 8:30 देखें।

"हर ...करें"- भजन 90:17; यशा. 26:12 से तुलना करें। इसलिए कि वह हम में कार्य करते हैं। हम विश्वास के किसी भी कार्य को पूरा करने के योग्य हैं। फ़िलि. 2:13; इफ़ि. 2:1.

1:12 "अनुग्रह" - विश्वासियों के उद्धार और उनकी आशीषों से जुड़ी हुयी प्रत्येक बात परमेश्वर की दया पर निर्भर है (रोमि. 6:23; इफ़ि. 2:8-9)। इस पद के आखिरी भाग को इस तरह भी कहा जा सकता है "हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह"।

"नाम"- संसार के सामने मसीही उनके नाम को रखते हैं (1 पतर. 4:16)।

तुम में महिमा पाए और तुम उसमें।

2 हे भाइयो-बहनो, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने और उनके पास हमारे इकट्ठे होने के विषय में तुम से बिनती करते हैं, 2कि किसी आत्मा, या संदेश या ऐसी चिट्ठी के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न ही तुम घबराना। 3किसी तरह से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक विश्वास का त्याग न हो ले और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र दिखायी न

"तुम उस में"- जिन में यीशु मसीह को महिमा (आदर, प्रशंसा) मिली है, उन में वह महिमा पाएंगे। यूहन्ना 17:10,22; रोमि. 8:30.

"तुम में महिमा पाए"- जब मसीह आएँगे, तब ऐसा होगा। (पद 10); ऐसा अभी भी होना चाहिए - 1 कुरि. 6:20; 10:31; कुल. 3:17; 1 पतर. 4:11.

2:1 "अपने...आने"- 1:7; प्रे.काम 1:11.

"उनके...में"- 1 थिस्स. 4:17; यूहन्ना 14:3; मत्ती 24:31 से तुलना करें। प्रायः इसे "रैप्चर" - कहा जाता है (उठा ले जाना)।

2:2 "चिट्ठी...हो"- हमे यह नहीं मालूम कि इन विश्वासियों को कौन परेशान कर रहा था। शायद यहाँ वह झूठे शिक्षकों की ओर इशारा करता है, जो शायद (वह सोचता था) कि उसके पत्र की नकल करने में हिचकिचाए न होते और यह कहा होता, कि यह पौलुस ने लिखा है। या कुछ और तरीके उसे दुखी किया होता। दूसरे पत्रों में उनके बारे में पौलुस ऐसे शिक्षकों का चरित्र दिखाता है रोमि. 16:17-18; 2 कुरि. 11:13-15 आदि। हम यह आशा न रखें कि सत्य के शत्रु जब इस से संघर्ष करते हैं, तो नैतिक कैसे हो सकते हैं।

"प्रभु का दिन"- फ़िलि. 1:10; 2:16 इसका अर्थ है मसीह का द्वितीय आगमन। 1 थिस्स. 1:8 में इसे "मसीह यीशु का दिन" कहा गया है। 1 थिस्स. 5:2 के "प्रभु के दिन" - के आरम्भ में वह आएँगे। कुछ लोग कहते हैं कि उठाए जाने के कुछ वर्ष पहले वह आएँगे, किन्तु स्वयं पौलुस ने ऐसा कभी नहीं कहा। 1 थिस्स. 4:16-17 पौलुस यह नहीं चाहता था कि थिस्सुलीनेके के विश्वासी यह सोचें कि मसीह का दिन आ चुका है - यह कि मसीह के आने के सम्बन्ध की शिक्षा के बारे में पौलुस नासमझ था। उनके अनुसार यदि वह इस विषय में गलत था, तो वे कह सकते थे कि सुसमाचार एवं अन्य विषयों पर भी वह गलत शिक्षा दे रहा था। इसके परिणाम बहुत दुखदपूर्ण हो सकते थे।

2:3 "किसी...में"- ऐसा धोखा देने वाले सदैव होंगे, जो विश्वासियों को एक सत्य से हटाकर दूसरे सत्य की ओर ले जाएंगे। मत्ती 24:4; रोमि. 16:18; इफ़ि. 2:6; कुल. 2:4 से तुलना करें। आवश्यकता इस बात की है कि हम जाने, परमेश्वर का वचन क्या कहता है और सतर्क रहें।

"जब तक" - पौलुस एक ऐसी घटना की चर्चा कर रहा है, जो मसीह के दिन (प्रभु के दिन) के पहले आएगी। वह यह नहीं कहता है कि यह "उठाए जाने वाली" ही घटना है। यदि उसने विश्वास किया होता, कि यह प्रभु के दिन के प्रारम्भ में आएगा, तो यह कहने का एक आदर्श समय हुआ होता। किन्तु वह ऐसा नहीं करता है। इसके विपरीत वह "विश्वास त्याग" की बात करता है। यहाँ यूनानी भाषा में "विद्रोह" या "त्यागना" या "विश्वास त्याग" है। सामान्यतया इसका अर्थ अपने मत या विश्वास या उसके सिद्धान्तों से दूर हो जाना है। प्रथम मनुष्य की आनाज्ञाकारिता (उत्पत्ति अध्याय 3) आरम्भ से परमेश्वर के - विरोध में बलवा करता और उस से दूर जाता रहा है। इस विषय में परमेश्वर के अपने लोग, इस्राएली, समस्त लोगों के प्रतिनिधि हैं। व्यव. 9:7,24; भजन 106:43; यशा. 1:2; यिर्म. 6:28. हर प्रकार का पाप विद्रोह का चिन्ह है (1 यूहन्ना 3:4 देखें)। पौलुस ने अन्तिम विद्रोह या सत्य से दूर जाने के विषय में लिखा है, जो इस युग के अन्त में होने वाला है। इसका प्रभाव पृथ्वी के सभी धर्मों और लोगों (मसीह की शिक्षाओं को त्यागने वाले मसीही) पर होगा। पद 4; मत्ती 24:10-25; 2 तीमु. 3:1-5; प्रका. 13:4,8,13-15.

"पाप का पुरुष"- यह विद्रोह एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा चलाया जाएगा जो इतना पापमय होगा कि विद्रोह और बुराई का मानो साक्षात् रूप हो। आने वाला ख्रीष्ट विरोधी यही है - 1 यूहन्ना 2:18.

"विनाश का पुत्र"- यूहन्ना 10:7 से तुलना करें। इसका अर्थ है, वह व्यक्ति जो विनाश से बंधा हुआ है और जिसका नाश निश्चित है।

दे, 4 जो विरोध करता है और परमेश्वर, जिसकी इबादत की जाती है, उन से अपने आपको बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर (भवन) में बैठकर अपने आपको परमेश्वर प्रगट करता है।

5 क्या तुम्हें याद नहीं, कि जब मैं तुम्हारे यहाँ था, तो तुम से ये बातें कहा करता था? 6 और अब तुम जानते हो, कि उसे

2:4 "पाप का पुरूष" - यह एक असाधारण राजनैतिक और मिलिट्री नेता होगा। वह ईश्वर होने का दावा करेगा और पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति से उपासना चाहेगा - प्रका. 13:1-8,15. उसके हृदय में न परमेश्वर और, न मनुष्य के बनाए नियमों के लिए किसी प्रकार का सम्मान होगा। स्वभाव और चरित्र में वह यीशु मसीह के बिल्कुल विपरीत होगा। (इब्रा. 10:7; भजन 40:8) संसार मसीह को नहीं चाहता। इसलिए वे मसीह विरोधी की ओर ही लग जाएंगे। वे परमेश्वर के कानून कायदों को नहीं चाहेंगे, इसलिए वे अधर्मी के हो जाएंगे।

"बड़ा ठहराता है"- दानि. 7:8,11,20,25; प्रका. 13:5-6.

"परमेश्वर के मन्दिर"- सच्चे परमेश्वर की उपासना के लिए समर्पित इमारत। मत्ती 24:15; मरकुस 13:14 से तुलना करें।

"अपने...है"- यह अन्तिम पाप है। बाईबल के अनुसार किसी व्यक्ति का दावा करना कि वह परमेश्वर है, परमेश्वर की निन्दा है। यूहन्ना 5:18; 10:31-33; मत्ती 26:64-65. विद्रोह और दुष्टता का साक्षात् दिखना - यह दुष्टता की चरम सीमा है। परमेश्वर सामर्थी सृष्टिकर्ता हैं। परमेश्वर ने सब को बनाया है। वह पूर्ण पवित्र है। सब लोग पापी हैं। उत्पत्ति 8:21; लैव्य. 20:7; यशा. 6:3; रोमि. 3:9-23; 1 पतर. 1:15-16.

2:5 "जब मैं तुम्हारे यहाँ था"- पौलुस उनके साथ थोड़े समय के लिए था। प्रे.काम 17:1-10. वह सोचता था कि उन्हें दी गयी शिक्षा में यीशु का द्वितीय आगमन एक प्रमुख विषय था।

2:6-7 जब तक परमेश्वर का समय पूरा न हो, कोई व्यक्ति या सामर्थ ख्रीष्ट विरोधी के प्रगट होने को रोके रहेगी। पौलुस ने यह सिखाया था कि यह सामर्थ या व्यक्ति कौन है। इस पत्र में उसने अपने शब्दों को नहीं दोहराया। इसलिए उसका अर्थ क्या था हमें नहीं मालूम।

इसलिए हम अर्थ के बारे में अड़े नहीं रह सकते। इस विषय पर लोग अनुमान लगाते रहे हैं।

कुछ विश्वासियों का कहना है कि पौलुस का अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा, ख्रीष्ट विरोधी के प्रगट होने को रोके रहता है। उनके अनुसार "जब तक वह दूर न हो जाए" का अर्थ है कलीसिया का उठाया जाना। उसके बाद पवित्र आत्मा जो सभी विश्वासियों में है उनके साथ इस पृथ्वी से उठा लिया जाएगा। यह भी एक कल्पना मात्र है। यहाँ पवित्र आत्मा, कलीसिया या कलीसिया उठाए जाने के विषय में नहीं है। यदि पौलुस का अर्थ यहाँ पवित्र आत्मा से था, तो "जब तक वह दूर न हो जाए" अवश्य नहीं कि कलीसिया के उठाए जाने के सम्बन्ध है। महाक्लेश या कलीसिया के उठाए जाने से पहले पवित्र आत्मा के उठाए जाने वाली शिक्षा के साथ एक समस्या यह है कि पूरे महाक्लेश के काल में भी कुछ प्रकार के विश्वासी या सन्त रहेंगे (प्रका. 7:9-17; 13:6 आदि)। यह कैसे संभव है कि पृथ्वी पर जब उन्हें पवित्र आत्मा की आवश्यकता बहुत अधिक होगी, वे उसके बिना इस पृथ्वी पर छोड़ दिए जाएँगे?

"जब तक वह दूर न हो जाए" का अर्थ भी स्पष्ट नहीं है। यह यूनानी शब्द का यथार्थ अर्थ नहीं है। सच पूछें तो इसका अर्थ होगा; "जब तक वह हमारे बीच से उठा नहीं लिया जाता।" इसका अर्थ रास्ते से हट जाना हो सकता है। निश्चित रीति से यहाँ यह उठाए जाने की ओर संकेत नहीं है। बीच में से उसके उठाए जाने में ऐसा कोई संकेत नहीं है, कि कुछ और या कोई और उसके साथ है। हमें यह भी नहीं बताया गया है कि वह "किसके बीच" से चला जाता है। ऐसे सन्देहस्पद वाक्यांश को लेना और ज़ोर डालकर कहना कि यह कलीसिया के उठाए जाने के सम्बन्ध में है, सही नहीं है।

कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि पद 6 में वह किसी स्वर्गदूत की ओर इशारा कर रहा है। इस युग के अन्त में निश्चित रीति से स्वर्गदूत काफ़ी क्रियाशील होंगे - प्रका. 7:1; 9:14-15; आदि (शब्द "स्वर्गदूत" एक वचन या बहुवचन - प्रकाशितवाक्य में 80 बार आता है)। यह संभव है कि परमेश्वर ने सही समय आने तक के लिए, ख्रीष्ट विरोधी के प्रगट होने पर रोक लगा रखी है। यह विचार दूसरे विचार के समान ही लगता है। यहाँ यह बात बार-बार कहे जाने की आवश्यकता है। पौलुस ने यह नही बताया कि उसका अर्थ क्या है, इसलिए हमें भी यह नहीं मालूम।

क्या रोक रहा है, कि वह अपने ही समय
में प्रगट हो। 7क्योंकि अनाचार (अधर्म)
का रहस्य अभी भी जारी है, पर अभी एक
रोकने वाला है और जब तक वह दूर न
हो जाए, वह रोके रहेगा। 8तब वह दुष्ट
प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की
फूँक से मार डालेंगे और अपने आगमन
के तेज से भस्म करेंगे। 9उस अधर्मी का
आना शैतान के काम के अनुसार सब
तरह की झूठी शक्ति, चिन्ह और अद्‌भुत
काम के साथ 10और बर्बाद होने वालों
के लिये दुष्टता के सब तरह के धोखे
के साथ होगा, क्योंकि उन्हों ने सच्चाई
को गले नहीं लगाया, जिससे उन का
उद्धार हो गया होता। 11और इसीलिये
परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली
शक्ति को भेजेंगे ताकि वे झूठ को अपना
लें, 12और जितने लोग सच्चाई पर भरोसा

2:7 "कानून हीनता का रहस्य"- इस के विषय में मत्ती 13:11; रोमि. 11:25; 16:25; 1 कुरि. 15:51 आदि में देखें। यदि परमेश्वर हम पर प्रगट न करते तो अधर्म और दुष्टता के अन्तिम विकास के बारे में हम कुछ भी नहीं जान सकते थे। पौलुस के समय में दुष्टता कार्यरत थी। जब तक पाप का पुरूष प्रगट नहीं होता, यह कार्य कर रही है और करती रहेगी। अधर्म पूरी रीति से विकसित हो चुकेगा। विधान को पूरी रीति से तज दिया जाए। सारी पृथ्वी पर एक दुष्ट व्यक्ति ही राज्य करेगा।

2:8 हालाँकि यह अधर्मी व्यक्ति सामर्थी होगा, किन्तु वह मसीह के सामने खड़ा नहीं रह सकेगा। देखें प्रका. 19:19-20.

"मुँह की फूँक से"- यशा. 11:4 यूनानी में इस शब्द फूँक (श्वांस) का अर्थ आत्मा भी होता है। यह उसके सामर्थी शब्द की ओर संकेत कर सकता है (इब्रा. 1:3; 4:12 से तुलना करें)। मसीह को बोलना ही है और उसके उद्देश्य पूरे होकर रहेंगे (तुलना करें उत्पत्ति 1:3 आदि; यशा. 55:11)।

"आगमन के तेज"- मत्ती 24:30; 25:31; तीतुस 2:13; प्रका. 19:11-12.

2:9 प्रभु यीशु मसीह का आना परमेश्वर के कार्य के अनुरूप था। मसीह विरोधी का आना भी शैतान के कार्यक्रम का एक भाग होगा। (प्रका. 13:2)। हम इस संसार की सही स्थिति को इस सत्य से समझ सकते हैं कि मानव जाति के लिए ख्रीष्ट विरोधी अधिक मशहूर होगा - प्रका. 13:3-4,8. यूहन्ना 1:10-11; 5:43 से तुलना करें।

"चिन्ह और अद्‌भुत"- मत्ती 24:24 देखें; और प्रका. 13:13,15 देखें। शायद ये आश्चर्यकर्म मसीह द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म के समान होंगे (प्रे.काम 2:22 देखें जहाँ वही शब्द उपयोग हुए हैं।) किन्तु आश्चर्यकर्म "झूठे" होंगे। यूनानी शब्द का अर्थ "अवास्तविक" या "झूठा" हो सकता है, किन्तु शायद यहाँ इसका अर्थ है, "धोखा देने वाला" । दूसरे शब्दों में वे सचमुच के आश्चर्यकर्म होंगे जिनको देखकर लोग झूठ पर विश्वास करेंगे।

2:10 "बर्बाद होने वालों"- 1 कुरि. 1:18; 2 कुरि. 2:15; 4:3; यूहन्ना 3:16. नाश होने वाले वे लोग हैं जो परमेश्वर के सत्य के नहीं किन्तु पाप के प्रेमी हैं। वे सत्य को नहीं चाहते और जान बूझकर तिरस्कार करते हैं। क्योंकि वे, वह सब करना चाहते हैं, जो उनके पापमय स्वभाव को पसन्द है। यूहन्ना 3:19-20; रोमि. 1:18. यहाँ सत्य के प्रति प्रेम और उद्धार के बीच पौलुस जो सम्बन्ध दिखलाता है, उस को ध्यान से देखें। हम एक के बिना दूसरे को प्राप्त नहीं कर सकते।

"दुष्टता के...धोखे"- दुष्टता लोगों को धोखा देती है (इब्रा. 3:13 से तुलना करें) यह संसार की तीन दुष्ट शक्तियों में से एक है (दो अन्य के लिए यिर्म. 17:9 और प्रका. 12:8 देखें)। इस युग के अन्त तक तीनों भयंकर रीति से विकसित हो जाएंगे।

2:11 "झूठ"- ख्रीष्ट विरोधी का यह दावा करना कि वह स्वयं परमेश्वर है (पद 4)। परमेश्वर यह चाहेंगे कि वे इतना धोखे में रहे कि झूठ पर विश्वास करें (रोमि. 1:28; 11:8; यशा. 29:10; 6:10; 1 राजा 22:19-23. यह दण्ड उनके सत्य के तिरस्कार करने के कारण होगा। यह बिल्कुल सही परिमाण का दण्ड भी होगा। पापी लोग जिसके लायक हैं, वही दण्ड उन्हें मिलेगा। भजन 18:25-26, और टिप्पणी देखें। सब से भयानक बात जो मनुष्य कर सकता है वह है, सत्य का इन्कार। इसका परिणाम मात्र झूठ की प्रतीति करना ही नहीं होगा, किन्तु अनन्तकालिक दण्ड।

नहीं करते वरन बुराई से खुश होते हैं, सब दण्ड पाएँ।

13हे भाइयो बहनो, और प्रभु के प्रिय लोगो, हमें तुम्हारे बारे में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहना चाहिए, कि परमेश्वर ने शुरूआत से तुम्हें चुन लिया, कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर और सच्चाई पर विश्वास करके मुक्ति पा जाओ। 14जिसके लिये उन्हों ने (परमेश्वर ने) तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया (बचाया), कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को हासिल करो। 15इसलिये हे भाइयो-बहनो, अडिग रहो और जो-जो बातें तुम ने क्या वचन, क्या चिट्ठी के द्वारा हमसे सीखी हैं, उन्हें थामे रहो।

16हमारे प्रभु यीशु मसीह आप ही और हमारे पिता परमेश्वर जिन्होंने हमसे प्रेम रखा और कृपा से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है, 17तुम्हारे मनों में शान्ति दें और तुम्हें हर एक अच्छे काम और बोल-चाल में सयाना बनाएँ।

3 अन्त में, हे भाइयो-बहनो, हमारे लिये प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन ऐसा जल्दी फैले और महिमा पाए जैसा तुम में हुआ था, 2और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में

2:12 "बुराई"- मत्ती 23:33; मरकुस 16:16; यूहन्ना 3:18; 5:28; गल. 1:8. "बुराई" - दुष्टता में आनन्दित होना और सत्य पर विश्वास करना एक दूसरे के विपरीत हैं। यदि हम एक करते हैं, दूसरा नहीं कर सकते।

2:13 "प्रभु के प्रिय लोगो"- कुल. 3:12; 1 थिस्स. 1:4; 1 यूहन्ना 3:1.

"परमेश्वर...लिया"- इफ़ि. 1:4.

"आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर"- 1 पतर. 1:2. इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर उन लोगों को अलग करता है जिनको उसने चुन लिया है। जिनको पवित्र बनाने के लिए उसने उन में अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। यह कुछ लोगों के विषय में सत्य नहीं है किन्तु प्रत्येक के बारे में "सत्य की प्रतीति कर के" लोगों को उद्धार देने के लिए परमेश्वर इसी तरीके का उपयोग करते हैं। सत्य के ऊपर डाले गए ज़ोर पर ध्यान दें। जैसा कि वह अगले पद में कहता है पौलुस यहाँ मसीह के सुसंदेश की ओर इशारा करता है।

2:14 "हमारा सुसमाचार"- जिसका ऐलान उन लोगों ने किया और जिसकी ज़िम्मेदारी मसीह ने उन पर सौंपी थी (गल. 1:11-12; 1 कुरि. 15:1-8)।

"बुलाया"- रोमि. 1:6; 8:28,30.

"महिमा...करो"- 1 थिस्स. 2:12; रोमि. 5:2; 8:17; यूहन्ना 17:22; सत्य पर विश्वास करने वालों और न करने वालों में यह अन्तर होगा - एक झुण्ड अनन्त महिमा प्राप्त करता है। दूसरा झुण्ड अनन्त दण्ड (पद 12) रोमि. 9:22-24 से तुलना करें।

2:15 "इसलिए"- उनके द्वारा दिए गए सत्य के प्रकाश में, वह उन्हें और हमें भी सत्य को पकड़े रहने के लिए कहता है। रोमि. 12:1; इफ़ि. 4:1 और कुल. 3:1 से तुलना करें।

"अडिग(स्थिर) रहो"- 1 कुरि. 15:58; इफ़ि. 6:11,13,14.

2:16 पिता और यीशु के बीच की मित्रता के बारे में पौलुस की शिक्षा पर ध्यान दें। मत्ती 3:16-17; 28:19; यूहन्ना 17:1; 2 यूहन्ना 3.

"प्रेम रखा"- पद 13; यिर्म. 31:3.

"आशा"- 1 पतर. 1:3; रोमि. 5:2; 8:24-25.

2:17 "शान्ति" या "प्रोत्साहन"- 2 कुरि. 1:3-4. लोग एक दूसरे को शान्ति दे सकते हैं। किन्तु सही प्रकार का प्रोत्साहन स्वयं परमेश्वर से मिलता है।

3:1 "हमारे ...करो"- रोमि. 15:30-32; इफ़ि. 6:19-20; कुल. 4:3-4.

"वचन...पाए"- पौलुस ने कभी भी किसी कलीसिया से यह प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा, कि परमेश्वर के कार्य के लिए उसे भौतिक वस्तुएँ और धन मिले। उसका मन और ध्यान दूसरी बातों पर लगा हुआ था। यदि हम उनकी सेवा सचमुच में करना चाहते हैं, तो हमें भी पौलुस के समान होना चाहिए।

3:2 इस समय पौलुस कुरिन्थ में था और दुष्ट लोग उसका विरोध कर रहे थे - प्रे.काम 18:12-13.

विश्वास नहीं है। 3परन्तु प्रभु सच्चे हैं, वह तुम्हें डावाँडोल नहीं होने देंगे, और उस दुष्ट से बचा कर रखेंगे। 4हमें प्रभु ने तुम्हारे ऊपर भरोसा है, कि जो-जो आदेश हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो और मानते भी रहोगे। 5परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज के साथ इन्तज़ार करने की दिशा में प्रभु तुम्हारे मन की अगुवाई करें।

6हे भाइयो-बहनो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहे, जिसका चाल चलन सही नहीं है और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं करता है। 7तुम स्वयं जानते हो, कि किस तरह तुम्हारा जीवन हमारे जीवन की तरह होना चाहिये था, क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित जीवन नहीं जी रहे थे, 8हम ने किसी की रोटी मुफ़्त में न खाई, पर मेहनत और कष्ट से रात दिन काम धंधा करते थे, कि तुम में से किसी पर बोझ न बनें। 9यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं था, लेकिन इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ कि तुम हमारी सी चाल चलो। 10जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि जो लोग मेहनत नहीं करना चाहते हैं, उन्हें खाना खाने का भी हक़ नहीं है।

11हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और निकम्मे बैठे रहते हैं, पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं। 12ऐसों को हम प्रभु यीशु में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपना खाना खाया करें। 13हे

3:3 "सच्चे"- 1 कुरि. 1:9; 10:13; 1 थिस्स. 5:24; 2 तीमु. 2:13; इब्रा. 3:6; 1 पतर. 4:19; 1 यूहन्ना 1:9; प्रका. 19:11.

"दुष्ट से"- मत्ती 6:13; यूहन्ना 17:11,15.

3:4 "प्रभु में भरोसा"- 2 कुरि. 2:3; 7:4; गल. 5:10; इब्रा. 6:9.

"जो-जो आदेश हम तुम्हें देते हैं"- मसीह के राजदूत के रूप (2 कुरि. 5:20), जिसे परमेश्वर ने सत्य का विशेष प्रकाशन दिया था (गल. 1:11-12) इफ़ि. 3:2-3)। पौलुस मसीह के नाम में पूरे अधिकार के साथ बात कर सका (पद 6)। उसने जो कुछ कलीसियाओं को लिखा वह सब मसीह की ओर से आज्ञाएँ थीं।

3:5 "प्रेम"- इफ़ि. 3:17-19; रोमि. 5:5.

"मसीह के धीरज"- जब मसीह इस पृथ्वी पर थे, वह मनुष्य और शैतान के सारे विरोध के बावजूद धीरज से परमेश्वर की इच्छा पूरी करते रहे। वह चाहते हैं कि उनक हर एक मानने वाला इन गुणों को झपने मे रखे। हमारे हृदयों में भी वह स्वयं करते हैं। इब्रा. 12:1-3 से तुलना करें।

3:6 "प्रभु यीशु के नाम में"- प्रभु के अधिकार से (पद 4)। विश्वासियों को यह आज्ञा मसीह की आज्ञा के रूप में लेनी चाहिए।

"अलग रहे"- इसका अर्थ पूरी तरह से सम्बन्ध तोड़ना नहीं है। इसका अर्थ है निकट संगति से किनारा करना। इसका अर्थ इस से अधिक भी हो सकता है। यदि कोई भाई या बहन पौलुस की शिक्षाओं के आधार पर जीवन नहीं बिताते तो हमें भी उन्हीं के समान व्यवहार नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि न ही परमेश्वर, न हम उस से प्रसन्न होते हैं। पद 14,15 से तुलना करें।

3:7-8 "तुम्हारा जीवन हमारे जीवन के तरह"- प्रे. काम 18:3; 20:34-35.

3:9 "अधिकार"- 1 कुरि. 9:12-15.

"आदर्श"- केवल परिश्रम ही में नहीं; किन्तु मसीही जीवन कैसे जिया जाये, इन सब में पौलुस हम सभी के लिए एक नमूना है (1 कुरि. 11:1; फ़िलि. 3:17)

3:10 "जो...हैं"- वह उन लोगों की ओर इशारा नहीं कर रहा है, जो कार्य करना चाहते हैं लेकिन उन्हें कार्य मिलता नहीं, किन्तु वे जो अवसर मिलने के बावजूद कार्य नहीं करना चाहते।

3:11 "दूसरों...है"- 1 तीमु. 5:13. आलस्य की वजह से प्रायः लोग दूसरों के कार्यों में हाथ डालते हैं। इसलिए पाप पर पाप बढ़ता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप पूरी कलीसिया को समस्या सहनी पड़ती है।

3:13 गल. 6:9; 1 कुरि. 15:58.

भाइयो-बहनो, भलाई करने में पीछे न रहो।
14यदि कोई हमारी इस चिट्ठी की बात
को न माने, तो उस पर ध्यान देना और
उसकी संगति न करो, जिससे वह शर्मिन्दा
हो, 15तौभी उसे बैरी मत समझना पर भाई
जानकर चेतावनी देना।
16अब प्रभु जो शान्ति के झरने हैं आप
ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे।
प्रभु तुम सब के साथ रहें।
17मैं पौलुस अपने हाथ से आशीर्वाद के
शब्द लिखता हूँ, हर चिट्ठी में मेरा यही सबूत
है। मैं इसी तरह से लिखता हूँ।
18हमारे प्रभु यीशु मसीह की असीम कृपा
तुम सब पर होती रहे।

3:14-15 पद 6 में नोट्स देखें। अनाज्ञाकारी मसीहियों को अनुशासित करने के लिए पौलुस जोर डालता है पद 6 के नोट्स देखें। अनुशासन के कारण वे अपने चालचलन के बारे में शर्मिन्दगी महसूस कर जैसे परमेश्वर चाहते हैं, वैसा जीना आरम्भ करते हैं।

3:16 "शान्ति का झरना"- रोमि. 15:33; 16:20; 2 कुरि. 13:11; फ़िलि. 4:9; 1 थिस्स. 5:23; इब्रा. 13:20 से तुलना करें।

"शान्ति"- मसीह जिस का मार्ग शान्ति दिखाता है, उसे पौलुस फ़िलि. 4:6-7 में दिखाता है।

3:17 पौलुस ने कुछ (शायद सभी) पत्रों को दूसरों से लिखवाया। रोमि. 16:22 से तुलना करें। उसके नाम का उपयोग कर के झूठे शिक्षक कहीं कलीसियाओं को न लिखें, इसके प्रति वह सतर्क था 2:2. अपने सभी लिखे पत्रों में वह अन्त में अपने हाथों से कुछ लिखा करता था - 1 कुरि. 16:21; गल. 6:11; कुल. 4:18 देखें।

3:18 रोमि. 1:7; 16:20.